Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 6 ~ Issue 1 (2018) pp: 91-95
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

भारत में दूरदर्शन का पात्र

Dr.P.M. SHARMILA
ASSOCIATE PROFESSOR, GOVERNMENT FIRST GRADE COLLEGE VIJAYNAGAR, BANGALORE-104, KARNATAKA
E-Mail :vidyasharmila@gmail.com

प्रस्तावन

दूरदर्शन भारत सरकार द्वारा स्थापित एक स्वायत्त सार्वजनिक सेवा प्रसारक है, जो प्रसार भारती के दो प्रभागों में से एक है। स्टूडियो और ट्रांसमीटर इंफ्रास्ट्रक्चर के मामले में यह भारत के सबसे बड़े प्रसारण संगठनों में से एक है, जिसकी स्थापना 15 सितंबर 1959 को हुई थी। यह डिजिटल स्थलीय ट्रांसमीटरों पर भी प्रसारण करता है।

यह आधुनिक युग में मनोरंजन के साथसाथ सूचनाओं की प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण साधन भी है। पहले इसका प्रयोग महानगरों के संपन्न घरों तक सीमित था, परंतु वर्तमान में इसकी पहुँच शहर और गाँव के घर-घर तक हो गई है। दरदर्शन का बढ़ता उपयोग – दूरदर्शन मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन का उत्तम साधन है। आज यह हर घर की आवश्यकता बन गया है I*विज्ञान ने आज के युग में बहुत उन्नति कर ली है। विज्ञान ने अनेकों अदभुत आविष्कार किये हैं। आज का युग काम करने का युग है। आज का मनुष्य दिन भर की भाग- दौड़ की वजह से शारीरिक और मानसिक रूप से थकावट महसूस करता है। इस थकावट को दूर करने के लिए वह नवीनता की इच्छा रखता है।भारत का सरकारी दूरदर्शन प्रणाल(चैनल) है। यह भारत सरकार द्वारा नामित पर्षद् प्रसार भारती के अंतर्गत चलाया जाता है। दूरदर्शन के प्रसारण की शुरूआत भारत में दिल्ली सितंबर, १९५९ को हुई। प्रसार-कक्ष तथा प्रेषित्रो की आधारभूत सेवाओं के लिहाज़ से यह विश्व का दूसरा सबसे विशाल प्रसारक है। हाल ही मे इसने अंकीय पार्थिव प्रेषित्रो (डिजिटल स्थलचर संचारी) सेवा शुरु की। दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क में 64 दूरदर्शन केन्द्र/ निर्माण केन्द्र, 24 क्षेत्रीय समाचार एकक, 126 दूरदर्शन रखरखाव केन्द्र, 202 उच्च शक्ति ट्रांसमीटर, 828 लो पावर ट्रांसमीटर, 351 अल्प शक्ति ट्रांसमीटर, 18 ट्रांसपोंडर, 30 चैनल तथा डीटीएच सेवा भी शामिल है।*

परिचय

दूरदर्शन का शाब्दिक अर्थ है - दूर की वस्तु को देखना। आधुनिक वैज्ञानिक युग में टेलीविजन या दूरदर्शन मनोरंजन एवं ज्ञानवर्द्धन का सबसे लोकप्रिय साधन है। दूरदर्शन अर्थात् टेलीविजन का सर्वप्रथम प्रयोग 25 जनवरी, 1926 को इंग्लैण्ड के एक इंजीनियर जॉन बेयर्ड ने किया था। इसका उत्तरोत्तर विकास होता रहा और अनेक कार्यों में इसकी उपयोगिता भी बढ़ी। हमारे देश में सन् 1959 से दूरदर्शन का प्रसारण प्रारम्भ हुआ और आज यह सारे भारत में प्रसारित हो रहा I

दूरदर्शन का महत्व

दूरदर्शन विज्ञानं का एक अद्भुत चमत्कार है। सन १९२६ में जे एल ब्रेयर्ड ने लोगो को टेलीविजन यानि दूरदर्शन से परिचित कराया। १९५९ में दिल्ली में पहला दूरदर्शन केन्द्र स्थापित किया गया। आज दूरदर्शन मनोंरजन का एक लोकप्रिय साधन बन चुका है तथा मनुष्य जीवन का एक अविभाज्य अंग भी।मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा देने, जानकारी बढ़ाने, प्रसार और प्रचार का एक महत्वपूर्ण साधन बन चुका है आज दूरदर्शन। दूरदर्शन के माध्यम से देश विदेश की जानकारियाँ, माध्यम से कक्षा में पाठ भी पढ़ाया जा सकता है। कई चैनल्स सिर्फ शिक्षा के लिए ही समर्पित किये गये है। इनके द्वारा बच्चो को घर बैठे पढ़ाया जाता है।आजकल दूरदर्शन को भू-उपग्रह से जोड़ दिया गया है ताकि ग्रामवासी भी इसका भरपूर लाभ उठा सके। दूरदर्शन के द्वारा अनेक सांस्कृतिक तथा मनोरंजक कार्यक्रम हम घर बैठे देख सकते है। इसका लाभ वृद्धो को भी होता है जो बीमारी के कारण घर से बाहर नहीं निकल सकते। दूरदर्शन के द्वारा वह अपना अकेलापन तथा शारीरिक-मानसिक दर्द वे कुछ समय के लिए भूलकर एक नये जगत में जी सकते है। सभी लोग अपनी-अपनी पसन्द से मनचाहा चैनल चुनकर नाटक,

हास्य-व्यंग्य, संगीत, कवि सम्मेलन, अनेक सीरियल्स, क्रीड़ा कार्यक्रम आदि से अपना मनोरंजक कर सकते है।इसके माध्यम से कृषि सम्बन्धी कार्यक्रम दिखाकर कृषि कार्यो की अधिकाधिक जानकारी दी जा रही है। इस तरह दूरदर्शन कृषि के विकास में किसानो की भी सहायता कर रहा है।विज्ञापनों को देकर व्यापारी वर्ग व विभिन्न वस्तुओं के निर्माताओं की सहायता कर रहा है। सुदूर ग्रहो की जानकारी इसके कैमरे सरलता से प्राप्त कर लेते है। विज्ञानं के नित्य नये-नये आविष्कारों ने इसे अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया है। दूरदर्शन ने हमे इस तरह दुनिया के अनेक पहलुओं को वाकिफ कराया है जो हम दूरदर्शन के ना होने पर लाभ उठाने से चूक जाते।लेकिन हमे इसके उपयोग पर काबू रखना चाहिए। क्योकि जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करने पर उसकी उपयोगिता कम और हानियाँ ज्यादा होती है।दूरदर्शन में कुछ कमियाँ भी दृष्टिगत होती है। इसको अनवरत देखने से उसके (स्क्रीन) पटल किरण आँखों के लिए हानिकारक साबित हो सकते है। कुछ कार्यक्रम जो बच्चो के लिए वर्ज्य है और सिर्फ प्रोढ़ो के लिए बनाये है उसे बच्चो तथा युवा-पीढ़ी के देखने से उन पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए दूरदर्शन को मर्यादित समय के लिए ही अपना मित्र बनाना चाहिए और इसका महत्व कायम बनाये रखना चाहिए।दूरदर्शन विज्ञान का वरदान - सामाजिक जीवन में दूरदर्शन की उपयोगिता को देखकर इसे विज्ञान का वरदान माना जाता है। दूरदर्शन पर विश्व में घटने वाली प्रमुख घटनाओं का प्रसारण, मौसम की जानकारी, बाढ़, भूकम्प, प्राकृतिक दुर्घटना आदि के समाचार तत्काल मिल जाते हैं। वर्तमान में दूरदर्शन के सैकड़ों चैनलों पर अनेक धारावाही कार्यक्रमों का प्रसारण हो रहा है। इनसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं की सशक्त अभिव्यक्ति हो रही है। इसी प्रकार रोगों के निवारण, जनसंख्या नियन्त्रण तथा कुत्सित कुप्रवृत्तियों को रोकने में भी इसकी काफी उपयोगिता है। महिलाओं को दस्तकारी एवं गृह - उद्योग के सम्बन्ध में इससे जानकारी दी जाती है। शिक्षा के क्षेत्र में तो यह विज्ञान का श्रेष्ठ वरदान है।

दूरदर्शन का दुष्प्रभाव - : दूरदर्शन विज्ञान की एक महान देन है लेकिन किसी भी वस्तु का दुरूपयोग करना संभव होता है। अगर व्यवहारिक रूप से देखें तो आज के युवाओं के लिए दूरदर्शन प्रयोगी और सहायक की जगह पर बाधक ज्यादा सिद्ध हुआ है। बच्चों और बड़ों की गतिविधियाँ कमरे तक ही सिमित हो गई हैं।विद्यार्थी ऐसे कार्यक्रमों में रूचि लेते हैं जो शिक्षा से संबंध न रखकर कार्यक्रमों से संबंधित होते हैं। वे ऐसे कार्यक्रमों को चुनते हैं जो रसीले और रोचक होते हैं जैसे- फिल्में, गाने, खेल, सीरियल आदि। ऐसे कार्यक्रमों में हिंसा को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाता है, अशलील दृश्य को दिखाने पर अधिक बल दिया जाता है और झूठ, फरेब, कपट और धोके के नए-नए तरीके बताये जाते हैं।अगर लोग अपने धर्मों को भूलकर कार्यक्रमों को ही देखने में लगे रहेंगे तो घर के सारे काम रुक जायेंगे। घटिया कार्यक्रमों से बच्चों की मानसिकता खराब होती है। बच्चे कमजोर और सुस्त बन जाते हैं। इन सब का बहुत बड़ा असर हमारे युवा वर्ग पर पड़ रहा है। समाज में चोरी, डकैती, लूट-मार सब कुछ इसी का परिणाम है।किसी भी घर में तनाव का वातावरण बन जायेगा और दूरदर्शन का सबसे बुरा प्रभाव सबसे पहले आँखों पर पड़ता है। शहर के छोटे-छोटे घरों में टी० वी० को नजदीक से देखना पड़ता है जिसका बहुत बुरा प्रभाव आँखों पर पड़ता है। केवल पर चलने वाले अशलील और हिंसा को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों पर सरकार की कोई भी रोक नहीं होती है और इन्हें देखकर युवा वर्ग भ्रमित हो जाते है। इस पर नियंत्रण करना बहुत जरूरी है।

दूरदर्शन पर सभी प्रोग्राम विद्यार्थियों के देखने योग्य नहीं होते हैं। ऐसे कार्यक्रमों को देखने से बच्चों के कोमल मन और मस्तिष्क पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। अगर बच्चे हर समय दूरदर्शन और पर लगे रहेंगे तो उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा। अगर दूरदर्शन खराब हो जाये तो इसकी मरम्मत करवाने में बहुत खर्चा होता है। दूरदर्शन पर सभी प्रोग्राम विद्यार्थियों के देखने योग्य नहीं होते हैं। ऐसे कार्यक्रमों को देखने से बच्चों के कोमल मन और मस्तिष्क पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। अगर बच्चे हर समय दूरदर्शन और पर लगे रहेंगे तो उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा। अगर दूरदर्शन खराब हो जाये तो इसकी मरम्मत करवाने में बहुत खर्चा होता है।

दूरदर्शन से कुछ हानियाँ भी हैं। इससे बच्चे मनोरंजन में अधिक रुचि लेने से पढ़ाई से जी चुराते हैं। टेलीविजन पर धारावाही कार्यक्रमों एवं मारधाड़ वाली फिल्मों के प्रसारण से नवयुवकों पर गलत प्रभाव पड़ रहा है। चोरी, बलात्कार, हिंसा आदि दुष्प्रवृत्तियाँ भी इससे बढ़ रही हैं। इस पर अश्लील विज्ञापनों का प्रसारण होने से पारिवारिक संस्कृति पर बुरा असर पड़ रहा है तथा नवयुवक फैशनपरस्त हो रहे हैं। इस तरह के दुष्प्रभावों के कारण दूरदर्शन को अभिशाप भी माना जा रहा है। 5. उपसंहार - आज के युग में मनोरंजन की दृष्टि से दूरदर्शन की विशेष उपयोगिता है। इससे संसार की नवीनतम घटनाओं, समाचारों आदि की जानकारी मिलती है तथा लोगों के ज्ञान का विकास होता है। आर्थिक एवं सामाजिक विकास में इसका महत्त्व सर्वमान्य है, परन्तु इसके कुप्रभावों से युवाओं को मुक्त रखा जावे, यह भी अपेक्षित है। शारीरिक थकावट को तो आराम करके दूर किया जा सकता है लेकिन मानसिक थकावट को दूर करने के लिए मनोरंजन की जरूरत होती है। समय के कम होने की वजह से व्यक्ति को ऐसे साधन की जरूरत होती है जो उसका घर बैठे ही मनोरंजन कर सके। दूरदर्शन आज के युग का सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार है जो एक मनोरंजन का साधन ह मनुष्य की उद्देश्य पूर्ति के लिए विज्ञान ने एक चमत्कार उत्पन्न किया है। दूरदर्शन से शिक्षा भी प्राप्त की जा सकती है। मनुष्य के मन में दूर की वस्तुओं को देखने की बहुत इच्छा होती है। विज्ञान की वजह से ही दूर की वस्तुओं, स्थानों और व्यक्तियों को आसानी से देखा जा सकता है। दूरदर्शन से दूर की घटनाएं हमारी आँखों के सामने प्रस्तुत की जा सकती है।

दूरदर्शन का अर्थ और विस्तार : टेलीविजन को हिंदी में दूरदर्शन कहते हैं। टेलीविजन दो शब्दों से मिलकर बना है- टेली और विजन। जिसका अर्थ होता है दूर के दृश्यों का आँखों के सामने उपस्थित होना। दूरदर्शन रेडियो की तकनीक का ही विकसित रूप है।टेलीविजन का सबसे पहला प्रयोग 1925 में ब्रिटेन के जॉन एल० बेयर्ड ने किया था। दूरदर्शन का अविष्कार 1926 में जॉन एल० बेयर्ड के द्वारा किया गया था। भारत में दूरदर्शन का प्रसारण 1959 ई० में किया गया था। टेलीविजन मनोरंजन का सबसे महत्वपूर्ण साधन होता है। इसने समाज के सभी लोगों और वर्गों को प्रभावित किया है।दूरदर्शन हर परिवार का एक अंग बन चुका है। दूरदर्शन मनोरंजन का सस्ता और आसानी से मिलने वाला साधन है। पूरे संसार के समाचार और दूरदर्शन से नई जानकारियां घर बैठे प्राप्त की जा सकती हैं। आज के समय में केबल या डिश से देशों के घर-घर में दूरदर्शन के अनेकों चैनल चल जाते हैं।दूरदर्शन ने आज की युवा पीढ़ी को बहुत अधिक प्रभावित किया है। पहले समय में सिर्फ श्वेत श्याम दूरदर्शन हुआ करते थे। पहले लोग शाम से लेकर देर रात तक दूरदर्शन पर कार्यक्रम देखे जाते थे। लेकिन आज के समय में रंगीन और केबल दूरदर्शन का युग है। देखने वाले दर्शकों के लिए सौ से भी अधिक चैनल हैं।

सिधांत : दूरदर्शन का सिद्धांत रेडियों के सिद्धांत से बहुत अधिक मिलता है। रेडियो के प्रसारण में तो वार्ता या गायक स्टूडियो में ही अपना गायन या वार्ता को पेश करता है। इसकी आवाज से हवा में तरंगे उठती हैं जो माइक्रोफोन बिजली की तरंगों में बदल जाती है इन्हीं तरंगों को भूमिगत तारों से ट्रांसमीटर तक पहुंचाया जाता है जो उन तरंगों को रेडियो की तरंगों में बदल देता है। इन्ही तरंगों को टेलीविजन एरियल पकड़ लेता है।दूरदर्शन पर हम सिर्फ वही देख सकते हैं जो दूरदर्शन का कैमरा चित्रित करता है और उन चित्रों को रेडियो तरंगों से दूर की जगह पर भेजा जा रहा हो। इसके लिए दूरदर्शन के विशेष स्टूडियों का निर्माण किया जाता है जहाँ पर गायक या नृतक अपना कार्यक्रम पेश करते हैं।

युवाओं के जीवन का महत्वपूर्ण अंग : दूरदर्शन आज के युवाओं का एक महत्वपूर्ण और जरुरतमंद अंग बन गया है। अगर युवक दूरदर्शन का नियंत्रित और संयमित प्रयोग करे तो उनके लिए दूरदर्शन बहुत उपयोगी सिद्ध होगा नहीं तो उसके दुष्परिणामों से मनुष्य को कभी नहीं बचाया जा सकता है।जिस तरह किसी कुएँ से पानी प्राप्त करके मनुष्य अपनी प्यास बुझा सकता है लेकिन अगर वो उस कुएँ में कूदकर आत्महत्या कर लेता है तो इसमें उसका कोई दोष नहीं होता है उसी तरह से दूरदर्शन युवा पीढ़ी की आधुनिक शिक्षा और संसार की हर जानकारी देने का साधन होता है लेकिन जब युवा छात्र अपना अमूल्य समय बेकार के कार्यक्रमों को देखने में गंवा देगा तो इसके लिए हम दूरदर्शन को दोष नहीं दे सकते हैं।

शिक्षा का सशक्त माध्यम : दूरदर्शन को शिक्षा का सशक्त माध्यम माना जाता है। दूरदर्शन पर सिर्फ औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ अनौपचारिक शिक्षा का भी प्रसारण होता है। सिर्फ ध्वनि और शब्दों का सहारा लेकर पाठ्यक्रम नीरस हो जाता है। दूरदर्शन पर विद्यार्थियों के लिए नियमित पाठ का प्रसारण किया जाता है।दूरदर्शन पर पाठ्यक्रम की जीती-जागती तस्वीर को देखकर विद्यार्थी की रूचि बढ़ जाती है और उन्हें भली-भांति समझ आ जाती है। दूरदर्शन पर अनपढ़ों के लिए साक्षरता के कार्यक्रम पेश किये जाते हैं। दूरदर्शन पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के द्वारा बच्चों, युवाओं, और प्रौढ़ों के लिए भी पाठों का प्रसारण किया जाता है।शिक्षा के अलावा दूरदर्शन से कृषि के आधुनिक यंत्रों और दवाईयों के बारे में भी जानकारी मिलती है। दूरदर्शन पर ऐसे अनेक प्रकार के कार्यक्रम दिखाए जाते हैं जिनसे आज की युवा पीढ़ी अपनी बुरी आदतों से छुटकारा पा सकते हैं। दूरदर्शन से विद्यार्थी संसार की छोटी से छोटी जानकारी और समाचार पत्र प्राप्त कर सकता है।भारतीय इतिहास, भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर आधारित कार्यक्रमों से आज के समय का युवा वर्ग अपने प्राचीन समय की जानकारी प्राप्त कर सकता है। इस तरह से दूरदर्शन ने युवा पीढ़ी के जीवन पर बहुत अधिक प्रभाव डाला है। भारत में कई करोड़ लोग निरक्षर होते हैं जिन्हें साक्षर बनाने के लिए दूरदर्शन का प्रयोग बनाया जाता है।

दूरदर्शन के लाभ : दूरदर्शन के बहुत अधिक लाभ हैं। इसकी मदद से हम घर बैठे देश-विदेश के अनेक समाचार सुन सकते हैं और समाचार को बोलने वाले को देख भी सकते हैं। संसार में कहीं भी होने वाले मैच या खेल को आसानी से देख सकते हैं। हमारे समाज में शराब पीना और बाल विवाह जैसी अनेक तरह की कुरुतियाँ फैली हुई हैं।दूरदर्शन पर ऐसे कार्यक्रमों को पेश करना चाहिए जिससे इन कुरीतियों के दुष्परिणामों का पता चल सके। ऐसे कार्यक्रम देखने वालों के दिल पर बहुत प्रभाव डालते हैं। इसी तरह से धीरे-धीरे सामाजिक कुरीतियाँ भी दूर हो जाती हैं|इससे कोई भी लाभ उठा सकता है चाहे वो छात्र हो, शिक्षक हो, डॉक्टर हो, वैज्ञानिक हो,कृषक हो, मजदूर हो, व्यापारी हो, उद्योगपति हो या गृहिणी हो।इसे आसानी से एक जगह से दूसरी जगह पर ले जाया जा सकता है। इसे देखने के लिए भी किसी प्रकार के चश्मे, मनोभाव या फिर अध्ययन की जरूरत नहीं होती है। इससे सिर्फ किसी भी क्षेत्र की जानकारी ही नहीं मिलती है इससे कार्य व्यापार, नीति ढंग, और उपाय को आसानी से दिखाया जाता है। दूरदर्शन से हमें जीवन की समस्याओं और घटनाओं के बारे में बहुत ही आसानी से जरूरत के रूप में प्रस्तुत करते हैं। दूरदर्शन से हम अपने त्यौहारों, मौसमों, खेलों, तमाशे, नाच-गाने, कला, संगीत, पर्यटन, व्यापार, धर्म, साहित्य, दर्शन आदि के बारे में हर एक रहस्य खुलता जा रहा है। दूरदर्शन इन सभी जानकारियों को प्राप्त करने में आने वाली कठिनाईयों को भी बताता है और उनके हल के बारे में भी बताता है।

दूरदर्शन एक मनोरंजन का साधन : दूरदर्शन पर अनेक प्रकार के कार्यक्रम दिखाए जाते हैं। दुरदर्शन पर नाटक दिखाए जाते हैं, पिक्चर दिखाई जाती हैं और कई तरह के सीरियल भी दिखाए जाते हैं। दूरदर्शन से लोगों का भी बहुत मनोरंजन होता है। जब दफ्तर से आकर घर पर दूरदर्शन पर अपने मनपसंद कार्यक्रम को चलाते हैं तो सारे दिन की थकान उतर जाती है।

अब हमें फिल्मों को देखने के लिए सिनेमाघर जाने की जरूरत ही नहीं होती है। हर रोज किसी न किसी तरह के विषय पर कार्यक्रम से अपना मनोरंजन करके एक विशेष तरह के उत्साह और प्रेरणा को प्राप्त कर सकते हैं। दूरदर्शन पर दिखाई जाने वाली फिल्मों से हमारा मनोरंजन होता है और धारावाहिकों से भी हमारा मनोरंजन होता है।

इसी तरह से बाल-बच्चों, वृद्धों, युवकों के साथ विशेष प्रकार के शिक्षित और अशिक्षित वर्गों के लिए दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों से हम अपना मनोरंजन कर सकते हैं। इससे बहुत ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। दूरदर्शन पर इतने कार्यक्रम दिखाए जाते हैं कि मनुष्य चक्कर में पड़ जाता है कि किसे देखूं और किसे नहीं।यह दुविधा इसलिए उत्पन्न हुई है क्योंकि पहले समय में सिर्फ एक ही सरकारी चैनल चलते थे लेकिन आज के समय में दो सौ से भी अधिक चैनल हैं। हर चैनल पर रात दिन कुछ न कुछ आता ही रहता है।

उपयोग : दूरदर्शन के मानव जीवन में उतने ही प्रयोग होते हैं जितने कि मानव जीवन में आँखों के प्रयोग होते हैं। दूरदर्शन पर हम नाटक, खेल-कूद, गाने आदि के कार्यक्रमों को देखकर अपना मनोरंजन कर सकते हैं। नेता भी अपना संदेश दूरदर्शन से लोगों तक प्रभावशाली ढंग से पहुँचा सकते हैं। शिक्षा में भी दूरदर्शन का प्रयोग सफलता के साथ किया जाता है। आज के समय में लाखों और करोड़ों विद्यार्थी अपनी-अपनी कक्षा में बैठे किसी भी अच्छे अध्यापक को पढ़ाते हुए देख और सुन सकते हैं। समुंद्र के अंदर जब खोज की जाती है तब दूरदर्शन का प्रयोग किया जाता है।अगर किसी डूबे हुए जहाज का पता लगाना होता है तब टेलीविजन कैमरे को पानी में उतारा जाता है। उसके द्वारा समुंद्र के अंदर की जानकारी ऊपर बैठे लोगों के पास पहुंच जाती है। अंतरिक्ष की जानकारी भी टेलीविजन से प्राप्त की जा सकती है।दूरदर्शन का प्रयोग हर वर्ग, हर उम्र, हर स्तर का व्यक्ति रूचि के साथ चौबीसों घंटे देख सकता है। मीडिया का सबसे मुखर, प्रभावशाली और आकर्षक माध्यम टेलीविजन माना जाता है। टेलीविजन श्रव्य के साथ-साथ दृश्य भी दिखाता है, इसलिए यह अधिक रोचक है। भारत में अपने आरंभ से लगभग ३० वर्ष तक टेलीविजन की प्रगति धीमी रही किन्तु वर्ष १९८० और १९९० के दशक में दूरदर्शन ने राष्ट्रीय कार्यक्रम और समाचारों के प्रसारण के ज़रिये हिंदी को जनप्रिय बनाने में काफी योगदान किया। वर्ष १९९० के दशक में मनोरंजन और समाचार के निज़ी उपग्रह चैनलों के पदार्पण के उपरांत यह प्रक्रिया और तेज हो गई। रेडियो की तरह टेलीविज़न ने भी मनोरंजन कार्यक्रमों में फिल्मों का भरपूर उपयोग किया और फ़ीचर फिल्मों, वृत्तचित्रों तथा फिल्मी गीतों के प्रसारण से हिंदी भाषा को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने के सिलसिले को आगे बढ़ाया। टेलीविजन पर प्रसारित धारावाहिक ने दर्शकों में अपना विशेष स्थान बना लिया। सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक तथा धार्मिक विषयों को लेकर बनाए गए हिंदी धारावाहिक घर-घर में देखे जाने लगे। रामायण, महाभारत हमलोग, भारत एक खोज जैसे धारावाहिक न केवल हिंदी प्रसार के वाहक बने बल्कि राष्ट्रीय एकता के सूत्र बन गए। देखते-ही-देखते टीवी कार्यक्रमों के जुड़े लोग फ़िल्मी सितारों की तरह चर्चित और विख्यात हो गए। समूचे देश में टेलीविज़न कार्यक्रमों की लोकप्रियता की बदौलत देश के अहिंदी भाषी लोग हिन्दी समझने और बोलने लगे।

'कौन बनेगा करोड़पति' जैसे कार्यक्रमों ने लगभग पूरे देश को बांधे रखा। हिन्दी में प्रसारित ऐसे कार्यक्रमों में पूर्वोत्तर राज्यो, जम्मू-कश्मीर, और दक्षिणी राज्यों के प्रतियोगियों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और इस तथ्य को दृढ़ता से उजागर किया कि हिंदी की पहुंच समूचे देश में है। विभिन्न चैनलों ने अलग-अलग आयु वर्गों के लोगों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के सीधे प्रसारणों से भी अनेक अहिन्दीभाषी राज्यों के प्रतियोगियो ने हिन्दी में गीत गाकर प्रथम और द्वित्तीय स्थान प्राप्त किए। इन कार्यक्रमों में पुरस्कार के चयन में श्रोताओं द्वारा मतदान करने के नियम ने इनकी पहुँच को और विस्तृत कर दिया। टेलीविजन चैनलों पर प्रसारित किए जा रहे तरह-तरह के लाइव-शो में भाग लेने वाले लोगों को देखकर लगता ही नहीं कि हिंदी कुछ विशेष प्रदेशों की भाषा है। हिंदी फिल्मों की तरह टेलीविजन के हिन्दी कार्यक्रमों ने भी भौगोलिक, भाषाई तथा सांस्कृतिक सीमाएँ तोड़ दी हैं।

हिन्दी समाचार भी सबसे अधिक दर्शकों द्वारा देखे-सुने जाते हैं। टीआरपी के मामले में वे अंग्रेजी चैनलों से कहीं आगे हैं। हिंदी के समाचार चैनलों की संख्या लागातार बढ़ती जा रही है। इस सन्दर्भ में यह जानना रोचक है कि स्टार, सोनी और ज़ी जैसे विदेशों से अपलिंक होने वाले चैनलों ने जब भारत में प्रसारण प्रारम्भ किया तो उनकी योजना अंग्रेजी कार्यक्रम प्रसारित करने की थी, किन्तु बहुत जल्दी उन्होने महसूस किया कि वे हिन्दी कार्यक्रमों के जरिये ही इस देश में टिक सकते हैं और वे हिंदी चैनलों में परिवर्तित होते गए। इतना ही नहीं, अंग्रेजी के कई चैनल अब लोगों को अपनी ओर अकृष्ट करने के लिये हिन्दी का प्रयोग बड़े पैमाने पर करने लगे हैं।

उपसंहार : जो तर्क हमने दिए हैं वो दूरदर्शन पर नहीं बल्कि दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों पर हैं जो युवाओं को भ्रमित करते हैं। अगर हम दूरदर्शन को नकारेंगे तो उससे मिलने लाभों को भी समाप्त कर देंगे। हम दूरदर्शन के लाभों से यह बता सकते हैं कि दूरदर्शन विज्ञान का एक बहुत ही अमूल्य अविष्कार है।इसका प्रयोग देश की प्रगति के लिए भी किया जाना चाहिए। हमारी युवा पीढ़ी को संयम में रहकर ज्ञान के कार्यक्रमों को देखने की जरूरत है। दूरदर्शन तो एक ऐसा साधन है जिससे मनुष्य अपने जीवन को आनंद और उज्ज्वल कर सकता है। वास्तविक बात तो यह है कि किसी भी वस्तु में गुण ही गुण नहीं बल्कि दोष भी होते हैं। अमृत का प्रयोग अगर सीमा से ज्यादा किया जाये तो वह भी हानिकारक होता है।

*Corresponding Author: Dr.P.M. SHARMILA

1. Anbarasan, E. (2007). Citizen Journalism and New Media. In N. Rajan (Ed.), 21st Century Journalism in India. New Delhi: Sage Publications. 3

2. Ei Chew, H., LaRose, R., Steinfield, C., & Velasque, A. (2011). The Use of Online Social Networking by Rural Youth and its Effects on Community Attachment. Information, Communication & Society, 14(5), 726-747

3. Martin, P., & Thomas, E. (2012). Social Media Usage and Empact. N ew Delhi: Global Vision Publishing House.

4. Gagan, G. (2012). Social Media Networking and concept of International Citizenship. In A.Saxena (Ed.), Issue of communication development and society (pp. 163-167). New Delhi: Kanishka Publisher, Distributors.

5. Dutta, S. (2013). Online journalism and E-Paper: A new age. Communication Today, 15, 76 85. 12. Nayak, S. C. (2013). Social Media: Connecting One and All. Communication Today (Oct Dec), 66-74.